भास्यो देहाध्यासथी, आत्मा देहसमान॰
पण ते बन्ने भिन्न छे, जेम असि ने म्यान॰५०॰
अध्यासाद् भासिता देह-देहनोः समता, न सा॰
तयोर्द्वयोः सुभिन्नत्वादसिकोशायते ध्रुवम्॰५०॰
भास्यो देहाध्यास से, आत्मा देह समान॰
पर वे दोनो भिन्न है, जैसे असि से म्यान॰५०॰

The body and the soul seem one,
Distinct are both, but this deceives;
A l o n e the body- infatuation,
Distinct are both as swords and sheaths. 50

जें द्रष्टा छे दृष्टिनो, जे जाणे छे रुप॰
अबाध्य अनुभव जे रहे, ते छे जीवस्वरुप॰५१॰
दृष्टेर्दृष्टाऽस्ति यो वेत्ति, रुपं सर्वप्रकारगम्॰
भात्यऽबाध्याऽनुभूतिर्या साऽस्ति जीवस्वरुपिका॰५१॰
जो दृष्टा है दृष्टि का, जो जानै है रुप॰
जो अबाध अनुभव करै, सो है जीव स्वरुप॰५१॰

Ah ! one that sees the sight and knows,
Experiences one unconcealed;
Indisputable sing that shows,
The soul itself to all revealed. 51

छे इंद्रिय प्रत्येकने, निज निज विषयनुं ज्ञान॰
पांच इंद्रिना विषयनुं, पण आत्माने भान॰५२॰
स्वस्वविषये संज्ञानं प्रतिन्द्रियं विभाति भोः !॰
परं तु तेषां सर्वेषां जागर्ति मानमात्मनि॰५२॰
है इन्द्रिय प्रत्येक को निज निज विषयी ज्ञान॰
पंचेन्द्रिय केविषय को, पर आत्मा को भान॰५२॰

Each sense has its own subject –knowledge;
The knowledge of all sense-subjects;
The soul possesses, `tis not strange,
The ear hears, the soul rejects. 52

देह न जाणे तेहने, जाणे न इंद्रिय प्राण
आत्मानी सत्तावडे, तेह प्रवर्ते जाण५३
न तद् जानाति देहोऽयं नैव प्राणो न चेन्द्रियम्
सत्तया देहनो देहे तत्प्रवृत्तिं निबोध रे !५३
देह न उस को जानती, जानि न इन्द्रिय प्राण
आत्मा की सत्ता सहित, इन्हें प्रवर्तो जान५३

The body cannot know the soul,
Nor senses, nither knows the breathj;
All do their deeds, if there`s the soul,
If it goes off, it is called death. 53

सर्व अवस्थाने विषे, न्यारो सदा जणाय
प्रगटरुप चैततन्यमय, ए एंधाणे सदाय५४
योऽवस्थासु समस्तासु ज्ञायते भेदभाक्सदा
चेतनतामय: स्पष्ट: स ह्यात्मा नान्यलक्षण:५४

In all the states the soul separate,
Is seen alsways as consciousness;
Distinctinve mark is accurate,
To ascertain the souls presence. 54

घट, पट आदि जाण तुं, तेथी तेने मान
जाणनार ते मान नहीं , कहिये केंबुं ज्ञान ?५५
घटादिसर्व जानासि अतस्तन्मन्यसे शिशो

तं न जानासि ज्ञातारं तद् ज्ञानं ब्रूहि कीदृशम्ं५५ं

घटपटादि तू जानता, उनकी थिती को मानं

जाननहार न मानता, कहिए कैसा ज्ञानं५५ं

You know the pots and clothes and all,

Thus them believe but not the knower;

If pots and cloths exist big, small.,

Why not the soul with knowledge-power ? 55

परम बुध्दि कृष देहमां, स्थूल देह मति अल्पं

देह होय जो आतमा, घटे न आम विकल्प ं ५६ं

कृशे देहे घना बुध्दिरधना स्थूलविग्रहें

स्याद् देहो यदि ञ्आत्मैव नैवं तु घटना भवेत्ं५६ं

परमबुध्दि कृश देह में, स्थूल देह मति ञ्अल्पं

देह होय जो ञ्आतमा, घटे न ञ्आम विकल्पं५६ं

Supreme in thought, though bodiest thin,

In fat, strong bodies no cleverness;

This proves the body in the inn,

And not the soul, There`s no oneness. 56

जड चेतननो भिन्न छे, केवळ प्रगट स्वभावं

एकपणुं पामे नहीं, त्रणे काळ द्वयभावं५७ं

केवलं भिन्न एवाऽस्ति स्वभावो जड-जीवयो:ं

कदापि न तयोरैक्यं द्वैतं कालत्रिकेतयो:ं५७ं

जड चेतन से भिन्न है, केवल प्रकट स्वभावं

एक पना पाते नही, तीनों काल द्विभावं५७ं

The nature of the soul and matter,

Is clearlyu quite different

Can never be of one characte,

See ages all : past, future, present. 57

आत्मानी शंका करे, आत्मा पोते आप॰

शंकानी करनार ते, अचरज एह अमाप॰५८॰

आत्मानं शङकते ञ्रात्मा स्वयमज्ञानतो ध्रुवम्॰

य: शङकते स वै ञ्रात्मा स्वेनाऽहो ! स्वयशङकनम्॰५८॰

ञ्रात्मा की शंका करे, ञ्रात्मा चिंतै ञ्राप॰

शंका का कतौर वह, ञ्रचरज यही ञ्रमाप॰५८॰

O ! one that doubts the soul`s existence,

He himself the soul must be;

Without the doubter`s obvious presence,

Can there be doubt ? Surprise me. 58

शंका- आत्माना अस्तित्वना, आपे कह्या प्रकार॰

संभव तेनो थाय छे, अंतर कर्ये विचार॰ ५९॰

शिष्ये भगवता प्रोक्ता आत्माऽस्तित्वस्य युक्तय:॰

तत: र्संभवनं तस्य ज्ञायतेऽन्तर्विचारणात्॰५९॰

ञ्रात्मा का अस्तित्व तो आप कहे अनुसार॰

संभव है वह भासता, अन्तर किया विचार॰५९॰

By thinking deep uypon your points,

Of soul`s existence, I allege;

That there must be the soul who joints,

The conversation of this knowledge. 59

बीजी शंका थाय त्यां, आत्मा नहीं ञ्रविनाश॰

देह योगथी उपजे, देह वियोगे नाश॰६०॰

तथाऽपि तत्र शङकाऽऽत्मा नश्वर: नाऽविनश्वर:॰

देहसंयोगजन्माऽस्ति देहनाशात् तु नाशभाक्ँ६०ँ
शंका तहँ दूजी उठै आत्मा नहीं अविनाशँ
देह योग से उपजती, देह वियोग विनाशँ ६०ँ

The second doubt now I puit forth,
The soul cannot be eternal;
The contact of the body`s birth,
Destruction of union visual. 60

अथवा वस्तु क्षणिक छे, क्षणे क्षणे पलटायँ
ए अनुभवथी पण नही, आत्मा नित्य जणायँ६१ँ
अथवा क्षणिकंवस्तु परिणामि प्रतिक्षणम्ँ
तदनुभवगम्यत्वान्नाऽत्मा नित्योऽनुभूयतेँ६१ँ
अथवा अस्थिर वस्तु है, क्षण क्षण में पलटायँ
यह अनुभव में भी नहीं, आत्मा नित्य जनायँ६१ँ

Or things are transient, constant change,
Is seen in every living being;
And sunstances without knowledge,
I see, thus, ther`s no eternal thing. 61

देह मात्र संयोग छे, वळी जड, रुपी दृश्यँ
वेतनानं उत्पत्ति लय, कोना अनुभव वश्य ?ँ६२ँ
देहमात्रं तु संयोगि दृश्यं रुपि जडं घनंम्ँ
जीवीत्पत्ति-लयावत्र नीतौ केनाऽनुभूतिताम् ?ँ६२ँ
देह मात्र संयोग है, वह जड रुपी दृश्यँ
चेतन का उत्पाद क्षय, किस अनुभव केवश्यँ६२ँ

The body is only adherence,
The onject seem. ;lifeless. With forms;

Who know the soul`s genesis, hence,

Or death the of ? Think of the norms. 62

जेना ञ्रनुभव वश्य ए, उत्पन्न, लयनुं ज्ञान॰

ते तेथी जूदाविआ, थाय न केमें भान॰६३॰

उत्पत्ति-लयबोध्री तु यस्यानुभववर्तिनौ॰

स ततो भिन्न एवं स्यान्नान्यथा बोधनं तयो :॰६३॰

जिस केञ्रनुभव वश्य ये, उत्पति क्षय को ज्ञान॰

वह उस से पृथकत्व विन, रहे न किस विधि भान॰

The seer of the rise and fall,

Must be quite different from the scene;

Can hear the dead their deate-roll-call ?

Or ere one`s birte weat can be seen ? 63

जे संयोगी देखिये, ते ते अनुभव दृश्य॰

उपजे नहीं संयोगथी, आत्मा नित्य प्रत्यक्ष॰६४॰

दृश्यन्ते ये तु संयोगा ज्ञायन्ते ते सदात्मना॰

ना त्मा संयोगजन्मोऽत: किन्त्वात्मा शाश्वत: स्फुटम्॰ ६४॰

जो संयोग सुदेखिए, वह वह ञ्रनुभव दृश्य॰

उपजे नहिं संयोग से, आत्मा नित्य प्रत्यक्ष॰ ६४॰

Compounds of elements can be seen,

But not the soul that`s original;

The soul is the seer and not the seen,

Nothing can create the soul eternal. 64

जडथी चेतन उपजे, चेतनथी जड थाय॰

ऐवो अनुभव कोइने, क्यारे कदी न थाय॰६५॰

जडादुत्पद्यते जीवो जीवदुत्पद्यते जडम्॰

एषाऽनुभूति : कस्यापि कदापि क्वाऽपि नैव रे !"६५"

जडसे चेतन उपजता, चेतन से जड होय"

ऐसा अनुभव किसी को, कभी कहीं नहिं होय"६५"

From matter consciousness may rise,

Or conscioosness might it create;

Is not experience of the wise,

It never happens, say the great. 65

कोइ संयोगी थी नहीं, जेनी उत्पत्ति थाय"

नाश न तेनी कोइमां, तेथी `नित्य` सदाय" ६६"

यस्योत्पत्तिस्तु केभ्योऽपि संयोगेभ्यो न जायेते"

न नाश: संभवेत् तस्य जीवोऽतो ध्रुवति ध्रुवम्"६६"

नही किसी संयोग से, जिस की उत्पति होय"

नाश न जिसका किसी से, सदा नित्य यों होय"६६"

If out of any element,

One is not created at all;

It cannot be put to an end,

The soul is seen thus eternal. 66

क्रोधादि तरतम्यता, सर्पादिकनी मांय"

पूवजन्मसंस्कार ते, लीवनित्यता त्यांय"६७"

क्रोधादितारतम्यं यत् सर्प-सिंहादिजन्तुषु"

पूर्वजन्मजसंस्कारात् तत् ततो जीवनित्यता"६७"

तारतम्य क्रोधादिका, सर्प आदि केमध्य"

पूर्व जन्म संस्कार जो, जीव नित्यता सिध्द"६७"

In beings like snakes anger`s untaught,

Is shows the former birth`s havit;

Therefore the wise have deeply thought,

The soul has lost last body, not it. 67

आत्मा द्रव्ये नित्य छे, पर्याये पलटाय

वाळादि वय त्रण्यनुं, ज्ञान एकने थाय ६९

आत्माऽस्ति द्रव्यतो नित्य: पर्यायै: परिणामभाक्

बालदिवयसो ज्ञानं यस्मादेकस्य जायते ६८

आत्मा-द्रव्य यह एक है, परिवर्तन पर्याय

बाल आदि वय तीन में, एकहि ज्ञान दिखाय ६९

One sees in childhood, youth and age,

There`s knowledge og being the same;

So see the soul`s all states but change,

Remaining ever the substance same. 68

अथवा ज्ञान क्षणिकनुं, जे जाणी वदनार

वदनारो ते क्षणिक नहीं, कर अनुभव निर्धार ६९

क्षणिकं वस्त्विति ज्ञात्वा य: क्षणिक वदेदहो !

स वक्ता क्षणिको नाऽस्ति तदनुभवनिश्चितम् ६९

अथवा अस्थिर ज्ञान जो, जाने बोलनहार

वह वक्ता पर क्षणिक नहिं, कर अनुभव निर्धार ६९

One who describes absolute change,

Of everything at every moment;

Must be the same who knows and says ,

This falsifies his own statement. 69

क्यारे कोइ वस्तुनो, केवळ होय न नाश

चेतन पामे नाश तो, केमां भळे तपास ७०

कदाऽपि कस्यचिन्नाशो वस्तुनो नैव केवलम्

चेतना नश्यति चेत् तु किंरुप: स्याद् गवेषय ?ं७०ं

किसी वस्तु का सर्वदा , होवे नहीं विनाशं

चेतन पाए नाश तो, किसमें मिले ? तलाश !ं७०ं

Nothing is lost absolutely,

See water changes as the steam;

If consciousness is off totally,

Find out the ocean of soul-stream. 70

शंका - कर्ता जीव न कर्मनो, कर्म ज कर्ता कर्मं

अथवा सहज स्वभाव कां, कर्म जीवनो धर्मं७१ं

ऋात्मा नो कर्मण: कर्ता कर्मकर्ताऽस्ति कर्म वैं

वा सहज: स्वभाव: स्यात् कर्मणो जीवधर्माता ं ७१ं

कर्ता जीव न कर्म का, कर्महि करता कर्मं

ऋथवा सहज स्वभाव यह, कर्म जीव का धर्मं७१ं

The third doubt as the pupil`s plea,

The soul himself does no bondage;

Or bondage acts itself ugly,

ffixed by nature, or as knowledge. 71

आत्मा सदा ऋसंग ने, करे प्रकृति बंधं

अथवा ईश्वर प्रेरणा , तेथी जीव अबंधं७२ं

स्यादसंग: सदा जीवो बन्धों वा प्राकृतो भवेत्ं

वेश्वरप्रेरणा तत्र ततो जीवो न बन्धक:ं७२ं

ऋातमा सदा ऋसंग है, करे प्रकृति गुण बंधं

ऋथवा ईश्वर प्रेरणा, इस विधि जीव ऋबंधं७२ं

The soul is unalloyed for ever,

`Tis bondage that is really bound;

Or God is goading what`s soul`s power ?

Therefore the soul remains unbound. 72

माटे मोक्ष-उपाय नो, कोइ न हेतु जणाय ं

कर्मतणुं कर्तापणुं को नहीं, कां नहीं जाय ?ं७३ं

ततः केनाऽपि हेतुना मोक्षोपायो न गम्यते ं

जीवे कर्म विधातृत्वं नास्तस्ति चेन्न नश्यताम् ं७३ं

इसविधि मोक्ष उपाय का, कोइ न हेतुजनाय ं

नहीं कर्म कर्ता तथा, कर्तापना न जाय ं७३ं

It`s of no use to try for freedom,

The soul binds not, else binds for ever;

Thus I see carelessness is wisdom,

Unchanged is nature whatsoever. 73

समाधान :- होय न चेतनप्रेरणा, कोण ग्रहे तो कर्म ?ं

जडस्वभाव नहीं प्रेरणा, जुओ विचारी धर्म ं७४ं

चेतनप्रेरणा न स्यादादद्यात् कर्म कः खलु ?ं

प्रेरणा जडजा नाऽस्ति वस्तुधर्मो विचार्यताम् ं ७४ं

होय न चेतन प्रेरणा, कौन ग्रहे तो कर्म ?

जड स्वभाव नहिं प्रेरणा, सोचो युग केधर्म ं७४ं

In bondage if the soul not acts,

Who can accept the bondage worse ?

Examine minutely the facts,

No conscious acts in lifelessness. 74

जो चेतना करतुं नथी, थतां नथी तो कर्म ं

तेथी सहज स्वभाव नहीं, तेम ज नहिं जीवधर्म ं७५ं

यदि जीवक्रिया न स्यात् संग्रहो नैव कर्मणः ं

अतो न सहजो भावो नैव वा जीवधर्मता ॥७५॥
यदि चेतन कर्ता नही, होय नहीं तो कर्म ॥
अत: न सहज स्वभाव है; नहीं जीव का धर्म ॥७५॥

In any way if soul is still,
No bondage it acquires ever;
It`s thus no nature`s work so ill,
Nor character of soul`s own power. 75

केवळ होत असंग जो, भासत तने न केम ?
असंग छे परमार्थथी, पण निजभाने तेम ॥७६॥
यदि स्यात् केवलोऽसङ्ग: कथं भासेत न त्वयि ?
तत्वतोऽसंग एवाऽस्ति किंतु तन्निजबोधने ॥७६॥
केवल होत असंग जो, क्यों न तुझे आभास?
है असंग परमार्थ से, पर जब निजपन भास ॥७६॥

If soul is so bondageless quite,
To you it appears not why?
Unalloyed is soul, that`s right,
To one who knows his self, else dry. 76

कर्ता ईश्वर को नहीं, ईश्वर शुध्द स्वभाव ॥
अथवा प्रेरक ते गण्ये, ईश्वर दोष प्रभाव ॥७७॥
नेश्वर: कोऽपि कर्ताऽस्ति स वै शुध्दस्वभावभाक् ॥
यदि वा प्रेरकेतत्र नते दोषप्रसङ्गता ॥७७॥
कर्ता ईश्वर है नहीं, ईश्वर शुध्द स्वभाव ॥
या उसको प्रेरक कहें, ईश्वर दोष प्रभाव ॥७७॥

God does not bind, nor helps creation,
Perfection (purity) of the soul is God;

If He instigates, where`s perfection?
Nothing He does, such is the Lord. 77

चेतन जो निजभानमां, कर्ता आप स्वभाव
वर्ते नहीं निजभानमां, कर्ता कर्मप्रभाव ७८
यदाऽऽत्मा वर्तते सौवे स्वभावे तत्करस्तर्दा
यनात्मा वर्ततेऽसौवे स्वभावेऽतत्करस्तदा ७८
चेतन जो निज भान में, कर्ता आप स्वभाव
वर्ते नहिं जिन भाव में, कर्ता कर्म प्रभाव ७८

If one himself really knows,
The soul behaves in only knowledge
But binds himself in ignorance,
As childish plays in younger age. 78

शंका - जीव कर्मकर्ता कहो, पण भोक्ता नहीं सोय
शुं समजे जड कर्म के फळपरिणामी होय ७९
स्तादात्मा कर्मण: कर्ता किन्तु भ्ोक्ता न युज्यते
किंजानाति जडं कर्म येन तत् फलदं भवेत् ७९
जीव कर्म कर्ता कहो; पर भोक्ता नहिं सोय
क्या समझे जड कर्म यह, फल परिणामी होय ७९

The soul may bind, but not receives,
The fruits thereof, who likes the worse ?
No knowledge lifeless bondage has,
How can it allot the fruit as worth ? 79

फळदाता ईश्वर गण्ये, भोक्तापणुं सधाय
एम कहे ईश्वरतणुं, ईश्वरपणुं ज जाय ८०
भवेदीश्वर: फलदस्तदाऽत्मा भोगभाग् भवेत्

अप्यैयश्वर्य न युज्यते ईश्वरे फलदे मते ॥८०॥

फलदाता ईश्वर गिने, भोक्तापन सध जाय ॥

ऐसा ईश्वर को कहे, ईश्वरपन तो जाय ॥८०॥

Believe fruit-giver God impartial,

Defective Godhood sounds unwell;

In any other ways the soul,

Receiver of the fruits, don`t tell. 80

ईश्वर सिध्द यथाविना, जगत्नियम नहीं होय ॥

पछी शुभाशुभ कर्मनां, भोग्यस्थान नहीं कोय ॥८१॥

असिध्दे ईश्वरे नैव युज्यते जगत: स्थिति: ॥

शुभा s शुभविपाकानां तत: स्थानं न विद्यते ॥८१॥

ईश्वर सिध्द हुए विना, जगत नियम नहिं होय ॥

पुन: शुभाशुभ कर्म का, भोग्यस्थान न कोय ॥८१॥

Without good God choos must shine,

No proper place for good, bad deed;

To distribute ill fruits or fine,

Impartial person must be need. 81

समाधान :- भाव कर्म निजकल्पना, माटे चेतन रुप ॥

जीववीर्यनी स्फुरणा, ग्रहण करे जडधूप ॥ ८२॥

भावकर्म निजा क्लृप्तिरतश्चेतनरुपता ॥

जीववीर्यस्य स्फूर्तेस्तु लाति , कर्मचयं जडम् ॥८२॥

भाव कर्म निज कल्पना, यों कह चेतन रुपा ॥

जीव- वीर्य का स्फुरण, ग्रहण करे जड धूप ॥८२॥

The soul-activity is animate all,

Impure thoughts are self bondage;

Soul strength vibrates, infinite smal-

Gas-forms of bondage form the cage. 82

झरे, सुधा समजे नही, जीव खाय फळ थाय॰

एक शुभाशुभ कर्मनुं, भोक्तापणुं जणाय॰८३॰

विषं सुधा न वित्तोऽपि खादक: फलमाप्नुयात्॰

एवमेव शुभाऽशुभकर्मणो जीवभोक्तृता॰८३॰

विष अमृत समझे नहीं, जीव खाय फल पाय॰

यही शुभाशुभ कर्म का, भोक्तापना जनाय॰८३॰

Understands not nectar or poison,

That it sould cure or kill the eater;

The soul gets fruits of what is eaten,

Thus bondage bears fruits bad oir sweeter. 83

ऐक रांक ने एक नृप ए आदि जे भेद॰

कारणविना न कार्य ते, ए ज शुभाशुभ् वेद्य॰८४॰

एको रङक: प्रजापोऽन्य: इत्यादिभेददर्शनम्॰

कार्य नाऽकारणं क्वाऽपि वेद्यमेवं शुभाऽशुभम्॰८४॰

एक रंक औ` एक नृप, ये अनेक जो भेद॰

कारण विना न कार्य हो, यही शुभाशुभ वेद॰८४॰

See one errant and one empress,

Without some cause, no results strange,

Both human beings, unevenness-

Is due to bad or good bondage. 84

फळदाता ईश्वरतणी, एमां नथी जरुर॰

कर्म स्वभावे परिणमे, थाय भोगथी दूर॰८५॰

ईश्वर: फलदस्तत्राऽऽवश्यको न हि कर्मणि॰

परिणमेत् स्वभावात् तद् भोगाद् दूरं विनश्यति ॥८५॥
फलदाता ईश्वर यहाँ, नेकहु नाहिं जरुर ॥
कर्म स्वभावहि परिणमन, होय भोग से दूर ॥८५॥

Fruit giver God is not required,
By nature bondage fractifies;
No more the soul the juice enjoyed
The bondage falls, without surprise. 85

ते ते भोग्य विशेषनां, स्थानक द्रव्य स्वभाव ॥
गहन वात छे, शिष्य आ, कहीं संक्षेपे साव ॥ ८६॥
तत्तद्भोग्यविशोषणां स्थानं द्रव्यस्वभावता ॥
वर्तेयं गहना शिष्य ! संक्षेपे सर्वथोदिता ॥८६॥
जो जो भोग्य विशेष में, थानक द्रव्य स्वभाव ॥
गहन बात है शिष्य यह कहुँ संक्षेपे सुझाव ॥८६॥

The place and things of various kinds,
There are eternal heaven and hell;
The truth is deep beyoun your finds,
It`s here exposed in a nut-shell. 86

शंका :- कर्ता, भोक्ता जीव हो, पण तेनो नहीं मोक्ष ॥
वीत्यो काळ अनंत पण, वर्तमान छे दोष ॥८७॥
कर्ता भोक्ताऽस्तु जोवोऽपि तस्य मोक्ष न विद्यते ॥
व्यतीतोऽनन्तक: कालस्था ऽप्यात्मा तु दोषभाक् ॥८७॥
कर्ता भोक्ता जीव हो, पर न उसे हो मोष ॥
बीतो काल अनन्त पर; विद्यमान है दोष ॥८७॥

The soul may bind and get the fruit,
But never can it get the freedom;

Infinite time has passed, the root-

Of birth and death is not undone, 87

शुभ करे फळ भोगवे, देवादि गतिमांय॰

अशुभ करे नरकादि फळ, कर्मरहित न क्यांय॰८८॰

शुभकर्म करो जीवो देवादिपदवीं ब्रजेंत्॰

शुभकर्मकृज्जीव: श्वभ्रं न क्वाऽप्यकर्मक:॰८८॰

पुराय करे फल भोगता, देवादिक गति मांहिं॰

पाप करे नरकादि फल, कर्म रहित यों नांहि॰८८॰

Good deeds give heaven and bad, hell,

The soul is errant and world, wheel;

What state is bondageless, please tell,

Try any way result is nil. 88

समाधान :- जेम शूभाशुभ कर्मपद, जायवां सफळ प्रमाण॰

तेम निवृत्तिसफळता, माटे मोक्ष सुजाण॰८९॰

यथा शुभाशुभां कर्म जीवव्यापारत: फलि॰

फलवन्निर्वाणमप्यस्य तदव्यापारतस्तथा॰ ८९॰

ज्यों कि शुभाशुभं कर्म पद, जाने सफल प्रमाण॰

त्यों निवृत्ति साफल्य से, होवे मोक्ष सुजाण॰८९॰

As good or bad deeds give the fruit,

Non-action too is fruitful, due;

O ! wise, with talent see acute-

There`s freedom from the bondage true. 89

वित्यो काळ अनंत ते, कर्म शुभाशुभ भाव॰

तेह शुभाशुभ छेदतां, उपजेमोक्ष स्वभाव॰९०॰

सद्सत्कर्मणो भावादनन्ता: समयो गत:॰

संपद्येत तदुच्छेदे जीवे मुक्तिस्वभावता ९०

वीतो काल अनन्त जो कर्म शुभाशुभ भाव

वही शुभ्ांशुभ छेदकर, उपजे मोक्ष स्वभाव ९०

Infinite time has passed till now,

For good or bad ideas maintain-

The chain of bondage anyhow,

At hand is freedom, break the chain. 90

देहादि संयोगनो, आत्यंतिक वियोगा

सिध्द मोक्ष शाश्वतपदे, निज अनंत सुखभोग ९१

आत्यन्तिको वियागो यो देहादियोगज: खलु

तन्निर्वाणं समाख्यातं तत्राऽनन्तसुखैकता ९१

देहादिक संयोग से, होवे तदपि वियोग

सिध्द मोक्ष शाश्वत पना, पिज अनन्त सुखभोग ९१

Absolute loss of bodies and all,

Puts forth the freedom-state-renown:

Eternal status of the soul,

With happiness infinite own. 91

शंका :- होय कदापि मोक्षपद, नहीं अविरोध उपाय

कर्मो काळ अनंतना, शाथी छेद्यां जाय ९२

मोक्षस्थानं कदापि स्यान्नाऽविरोध्युपायि तत्

अनन्तकालज: कर्मचयच्छेद्य: कथं भवेत् ? ९२

हो कदापि जो मोक्षपद, नहिं अविरोध उपाय

कर्मो की थिति बहुत है, अत: न भेदी जाय ९२

May there be freedom of the soul,

There`s no unrefutable means;

By which, of time infinite all-

The bondages may lose bobbins. 92

अथवा मत दर्शन घणां, कहे उपाय अनेक

तेमां मत साचो कयो ? बने न एह विवेक ९३

वा मतानि सुभिन्नानि नैकोपायप्रदर्शीनि

मतं सत्यं तु किंतत्र शक्यैषा न विवेकिता ९३

अथवा-मत दर्शन बहुत, कहें उपाय अनेक

उन में सच मत कौनसा, बने न यही विवेक ९३

Or many a creed and schools of thoughts,

Shows steps to freedom differently;

What step is true, I can`t make out,

What must I choose,(i) ask reverently . 93

कई जातिमां मोक्ष छे, कया वेषमां मोक्ष

एनो निश्चय ना बने, घणां भेद ए दोष ९४

कस्यां जातौ भवेन्मोक्षो वेषे कस्मिंश्च निर्वृत्तिः ?

निश्चेतुमे तन्नो शक्यं बहुभेदो हि दूषणम् ९४

कौन जाति में मोक्ष है कौन वेष में मोक्ष

ऐसा निश्चय नहिं बने, अधिक भेद यह दोष ९४

What caste or garb leads one to freedom,

Is not determined, all differ;

The true religion must be one,

So many baffle, whes they whisper. 94

तेथी एम जणाय छे, मळे न मोक्ष-उपाय

जीवादि जाण्या तणो, शो उपकारज थाय ९५

तत एवं हि ससिध्दम् मोक्षोपायो न विद्यते

जीवादिज्ञानसंप्राप्तौ कोपकारो भवेदहा ! !ं९५ं

इससे ऐसा प्रकट है : मिले न मोक्ष उपायं

जीव आदि भी जानकर, क्या उपकार दिखायं९५ं

Thus I conclude the means of freedom,

Does not exist in any way;

What is the use of such a wisdom,

Of soul`s existence, ever-stay ? 95

पांचे उत्तरथी थयुं, समाधान संर्वागं

समजुं मोक्ष - उपाय तो, उदय उदय सभ्दाग्यं९६ं

प्रश्नपञ्चोत्तरे लब्धे समाधिः सकलोऽजनिं

यदि तत् साधनं विद्यां शिवं श्रेयो भवेच्छिवम्ं९६ं

पांचो उत्तर से हुआ, समाधान, सर्वगङं

समझूं मोक्ष उपाय तो, निकले भाग्य-पतंगं९६ं

Your five replies satisfied me,

About that I am daubtless now;

If I now know the means ah ! me !

Full fortunate I feel freed how ! 96

समाधान :- पांचे उत्तरनी थई, आत्मा विषे प्रतीतं

थाषे मोक्षोपाय नी, सहज प्रतीत ए रीतं९७ं

पञ्चोत्तरेण संजाता प्रतीतिस्तव ह्यात्मानिं

मोक्षोपायस्तथा तात ! एष्यति सहजं मनः९७ं

पाँचौ उत्तर से हुई, आत्मा-विषय प्रतीतिं

होगी मोक्ष उपाय में, सहज प्रतीत सु-रीतिं९७ं

Convinced you are of five replies,

The same way means you shall know soon;

An answer, comes the doubt soon flies,

The way to freedom is a boon. 97

कर्मभाव अज्ञान छे, मोक्षभाव निजवास

अंधकार अज्ञान सम, नाशे ज्ञानप्रकाश ९८

अज्ञानं कर्मभावोऽस्ति मोक्षभावो निजस्थितिः

ज्वलिते ज्ञानदीपे तु नश्येदज्ञानतातमः ९८

कर्म भाव अज्ञान है, मोक्ष भाव निज बास

अन्धकार अज्ञान सम; नाशे ज्ञान प्रकाश ९८

The bondage-cause is self ignorance,

Self steadiness is feedom-cause;

Ignorance is like darkness, trance,

The knowledge-torch brings it to pause. 98

जे जे कारणं बंधनां, तेह बंधनो पंथ

ते कारण छेदकदशा, मोक्ष पंथ भवअंत ९९

यो यो बन्धस्या हेतुः स्याद् बन्धमार्गो भवेत् स सः

बन्धोच्छेदस्थितीर्या तु मोक्षमार्गो भवान्तकः ९९

जो-जो कारण बन्धके, वही बन्ध केपंथ

उन कारण भेदक दशा, मोक्ष पंथ भव अंत ९९

The bongage-cause whatsoever,

Follow path of bondage;

Destroy those causes, being clever,

That path of freedom for all ages. 99

राग, द्वेष, अज्ञान ए, मुख्य कर्मनी ग्रंथ

थाय निवृत्ति जेहथी, ते ज मोक्षनो पंथ १००

रागो द्वेषस्तथाऽज्ञानं कर्मणां ग्रन्थिरग्रगा

यस्मात् तकन्निवृत्ति : स्यान्मोक्षमार्ग : स एव भो:!ं१००ं

रा्ग द्वेष अज्ञान ये, मुख्य कर्म केग्रंथं

हो जिससे निर्वृत्तिपन, वही मोक्ष को पंथं१००ं

Attachment, hatred, ignorance-

Are three chief knots of bondages;

The path of freedom, find at once,

If they fall off, leave no traces. 100

आत्मा सत् चैतन्यमय, सर्वाभासरहीतं

जेथी केवळ पामिये, मोक्ष पंथ ते रीतं१०१ं

संश्चेतनामयो जीव : सर्वाभासविवर्जित:ं

प्राप्यते स यत: शुध्दो मोक्षमार्ग : स एव भो !ं १०१ं

आत्मा सत चैतन्य, मय, सर्वाभास विहीनं

जिससे केवल पाइए, मोक्ष पंथ समचीनं१०१ं

The soul that`s living, conscious, beauty,

Quite free from all deluding views;

That leads to perfect purity,

Serves for the means of fredom huge. 101

कर्म अनंत प्रकारनां, तेमां मुख्ये आठं

तेमां मंख्ये मोहिनीय, हणाय ते कहुं पाठं१०२ं

अनन्तभेदकं कर्म चाष्टौ मुख्यानि तेष्वपिं

तत्राऽपि मोहना मुख्या वक्ष्ये वध्दनने विधिम्ं१०२ं

कर्म अनन्त प्रकार के, उनमें मुख्यहि आठं

उन में मुंख्य है मोहनी, हनने का कहुँ पाठं१०२ं

The bondage has infinite forms,

The chief are eight, with one foremost;

`Deluding Karma` the name adorns,
to cut it off take pains utmost, 102

कर्म मोहनीयभेद बे, दर्शन, चारित्र नाम
हणे बोध वीतरागता, अचूक उपाय ग्राम १०३
मोहनं द्विविधं तत्र दृष्टि-चरित्रभेदत:
बोधो हि दर्शनं हन्याच्चारित्रं रागहिनता १०३
कर्म मोहनी भेद दो, दर्शन चारित नाम
हने बोध विन रागता, ये ग्रचूक विधि ग्राम १०३

It polutes Faith and conduct both,
Unfailing means accordinglu;
Enlightenment by Teacher`s truth,
Unattachment true distinctly. 103

कर्मबंध क्रोधादिथी, हणे क्षमादिक तेह
प्रत्यक्ष अनुभव सर्वने, एमां शो संदेह १०४
क्रोधादियोगत: कर्मबन्ध: शान्त्यादिघातक:
ग्रत्रानुभूति : सर्वेषां तत्र का संशयालुता ? १०४
कर्म बन्ध क्रोधादि का, हने क्षमादिक तेह
प्रत्यक्ष ग्रनुभव सर्व से, इस में क्या संदेह १०४

All experience that passions bind;
Their antidotes as forgiveness;
Make one free from that bondage-kind,
No douobt there is, it`s common sense. 104

छोडी मत दर्शन तणो, आग्रह तेम विकल्प
कह्यो मार्ग आ साधशे, जन्म तेहना अल्प १०५
मतदृष्ट्यग्रहं त्यक्त्वा विकल्पाचरणं तथा

आराध्येतोक्तमार्गो यौ: तेषां हि जननाल्पता ॥१०५॥

छोडो मत दर्शन तनो, आग्रह और विकल्प ॥

कहा मार्ग यह साध कर, जन्म रहेंगे अल्प ॥१०५॥

If one gives up self-fuiding-whim,

And blind religious persuit, creed;

By following this Gopspel-cream,

He has few births, no doubt indeed ! 105

षट्पदना षट् प्रश्न तें, पूछ्या करी विचार ॥

ते पदनी सर्वांगता, मोक्ष मार्ग निरधार ॥१०६॥

पदषट्कस्य षट् प्रश्नां:पृष्टा: संचिन्त्य रे ! त्वया ॥

तत्पदानां समूहत्वे मुक्तिवास: सुनिश्चितम् ॥१०६॥

षट् पद केषट् प्रश्न जो,पूंछे किया विचार ॥

इन पद की सर्वागता, मोक्ष -मार्ग निर्धार ॥१०६॥

Six question of six doctrines asked,

Foundation of True Faith They lay;

If mind in these is doubtless fixed,

The path of freedom that`s saints say. 106

जाति -वेषनो भेद नहीं कह्यो मार्ग जो होय ॥

साधे ते मुक्ति लहे, एमां भेद न कोय ॥१०७॥

जातेर्वेषस्य नो भेदो यदि स्यादुक्तमार्गता ॥

तां तु य: साधयेत् सद्यो न कादित् तत्र भिन्नता ॥ १०७॥

जाति वेष का भेद नहिं, उत्क मार्ग जो होय ॥

साधे वह शिवपद लहे, इस में भेद न कोय ॥ १०७॥

Look not to caste or garb-distincion,

The path aforesaid is essential;

Whoever takes it gets Liberation,
No distinction in status final; 107

कषायनी उपशांतता, मात्र मोक्ष अभिलाष
भवे खेद अंतर दया, ते कहिये जिज्ञास १०८
कषायस्योपशान्त्वं मोक्षे रुचिर्हि केवलम्
भवे खेदो दया चित्ते सा जिज्ञासा समुच्यते १०८
कषाय की उपशांतता, मात्र मोक्ष अभिलाष
भवे खेद अन्तर दया: वे कहिए जिज्ञास १०८

Mark knowledge-thirst; inner compassion,
Suppression of all passions four;
The hope of only Liberation,
Dejection of such rebirth-tour. 108

ते जिज्ञासु जीवने, थाय सद्गुरुबोध
तो पामे समकितने, वर्ते अंतर शोध १०९
सद्गुरोर्बोधमाप्नुयात् स जिज्ञासुर्नरो यदि
तदा सम्यक्त्वलाभ: स्यादात्मशोधनता अपि १०९
उन जिज्ञासु सुजीव को ; हो सद्गुरु का बोध
तो पावे सम्यक्त्व को, वर्ते अन्तर शोध १०९

To such aspirants true Teacher`s preaching,
Inculcates faith, awakens vision;
They are inspired by such true teaching,
They deeply think for purification. 109

मत दर्शन आग्रह तजी, वर्ते सद्गुरुलक्ष
लहे शुध्द समकित ते, जेमां भेद न पक्ष ११०
मददृष्टयाग्रहैहींना यध्दृत्तिर्गुरुपादयो:

स संलभेत सम्यक्त्वं यत्र भेदो न पक्षता ॥११०॥

मत दर्शन आग्रह तजे वर्ते सद्गुरु लक्ष

लहें दर्शन सम्यक्त्व वह, जिस में भेद न पक्ष ॥११०॥

They give up bias for blind faith,

Self-guiding views; follow precept-

Of true Teachers, earn right piure faith,

Where`s no discord or party-spirit. 110

वर्ते निजस्वभावनो, अनुभव लक्ष प्रतीत

वृत्ति वहे निजभावमां, परमार्थे समाकित ॥१११॥

अनुभूतिः स्वभावस्य तल्लक्ष्यं तत्र प्रत्यय

निजतां संवहेद् वृत्तिः सत्यं सम्यक्वमुच्यते ॥ १११॥

वर्ते स्वयं स्वभाव का, अनुभव लक्ष प्रतीत

वृत्ति रहे निज भाव में, परमार्थे समकीत ॥ १११॥

Either they have soul-experience,

Attention to it continuous;

Or self-existence-conviction,

Internal vision`s Faith so glorious. 111

वर्धमान समकित थई , टाळे मिथ्याभास

उदय थाय चारित्रनो, वीतरागपद वास ॥ ११२॥

भूत्वा वर्ध्दिष्णु सम्यक्त्वं मिथ्याभासं प्रटालयेत्

चारित्रास्योदयस्तत्र तीवरागपदस्थिति : ॥ ११२॥

वर्धमान सम्यक्त्व से, टाले मिथ्याभास

उदय रहे चारित्र का, वीतरागपद वास ॥११२॥

As Faith grows deep false faith falls down,

Rises right Conduct gradually;

Full non-attachment is the crown,

Of conduct right perpetually. 112

केवळ निजस्वभावनुं , अखंड वर्त्ते ज्ञान
कहिये केवळ ज्ञान ते, देह छतां निर्वाण ११३
केवलं स्वस्वभावस्य स्थिरा यत्र भवेन्मति:
सोच्यते केवलज्ञानं देहे सत्यापि निर्वृति: ११३
केवल आत्म स्वरुप का, वर्त्ते अक्षय ज्ञान
कहिए केवल ज्ञान वह, देह-दशा निर्वाण ११३

Continuous flow of knowledge piure,
Of one`s self-nature unalloyed;
Is termed the perfect knowledge sure,
Liberated he is thought embodied. 113

कोटि वर्षनुं स्वप्न पण जाग्रत थदां समाय
तेम विभाव अनादिनो, ज्ञान थतां दूर थाय ११४
स्वप्नोऽपि कोटिवर्षस्य निद्रोच्छेदे समाप्यते
विभावोऽनादिजो दूरे नश्येद् ज्ञाने तथा सति ११४
कोटी वर्ष का स्वप्न ज्यों, जागृत दशा शमाय
वैसे अअथ विभाव भी, ज्ञानस्थित मिटजाय ११४

A dream of million years ends soon,
When one awakes, so self knowledge;
When shines, goes off one`s self-delusion,
Of time eternal ; `tis not strange. 114

छूटे देहाध्यास तो, नहीं कर्त्ता तुं कर्म
नहीं भोक्ता तुं तेहनो , ए ज धर्मनो मर्म ११५
देहाध्यासो यदि नश्येत् त्वं कर्ता न हि कर्मणाम्
न हि भोक्ता च तेषां त्वं धर्मैस्यैतद् गूढं मतम् ११५

छूटे देहाध्यास तो, नहीं कर्ता तू कर्म
उसका भोक्ता तू नहीं, यहीं धर्म का मर्म ११५

Let go the body-infatuation,
And you will not have bondage new;
You will not have deed-fruition,
This is Religion`s secret true. 115

ए ज धर्मथी मोक्ष छे, तुं छो मोक्ष स्वरुप
अनंत दर्शन ज्ञान तुं, अव्याबाध स्वरुप ११६
मोक्ष एव ततो धर्मान्मोक्षात्मा च त्वमेव भो:
अनन्तदर्शनं त्वं च अव्याबाधरुपस्त्वकम् ११६
इसी धर्म से मोक्ष है, तू है मोक्ष स्वरुप
अक्षय दर्शन ज्ञान तू, अव्याबाध स्वरुप ११६

This true Religion leads to Freedom,
You are image of Liberation ;
You are undisturable wisdom,
You are infinite knowledge, vision. 116

शुध्द, बुध्द, चैतन्यधन, स्वयंज्योति सुखधाम
बीजुं कहिये केटळुं ? कर विचार तो पाम ११७
शुध्दो बुध्दश्चिदात्मा च स्वयंज्योति : सुखालयम्
विचारय ततो विध्दि स्वं बहु तु किमुच्यते ? ११७
शुध्द बुध्द चैतन्य धन, स्वयं ज्योति सुख-ठांउ
अन्य कहां लौ औ ` कहूं कर विचार तो पाव ११७

Enlightened, pure, full consciousness,
Self-brilliant, home of happiness;
What more to say ? Have eagerness,

Think deep and you shall realise this. 117

निश्चय सर्वे ज्ञानीनो; आवी अत्र समाय
धरी मौनता एम कही, सहज समाधिमांय ११८
सर्वोषां ज्ञानिनामत्र समाप्तिमेति निश्चय:
उक्त्वौवं गुरुणां मौनं समाधी सहजे धृतम् ११८
निश्चय सब विद्वान को, आवै यहां समाय
घरो मौंन ऐसे कहीं, सहज समाधी मांय ११८

This sums up all absolute view,
Of all wise men, who knew the soul;
The dialogyue ends. The Teacher true,
Absorbs himself in nature cool . 118

सद्गुरुना उपदेशथी, आव्युं अपूर्व भान
निजपद निजमांही लह्युं , दूर थयुं अज्ञान ११९
सद्गुरोरुपदेशात् त्वाऽऽगतं भानमपूर्वकम
निजे निजपदं लब्धमज्ञानं लयतां गतम् ११९
सद्गुरु केउपदेश से हुआ अपूरव मान
निजपद निज मांही लहो, दूर हुआ अज्ञान ११९

The pupil praises his true Teacher,
I know what I had never known;
By teaching of my own true Teachger,
Ignorance passed and knowledge shone 119

भास्युं निजस्वरुप ते, शुध्द चेतनारुप
अजर, अमर, अविनाशी ने, देहातीत स्वरुप १२०
तद् भासितं निजं रुपं शुध्द` चैतन्यलक्षणम्
अजरं चामरं स्थास्नु देहातीत सुनिर्मलम् १२०
भासे स्वयं स्वरुप वह, शुध्द चेतना रुप

अजर अमर अविनाश जो देहातीत स्वरुप ॥१२०॥

I knew my self pure consciousness,
Immortal, ever-lasting strong;
Above all body-states lifeless,
Perpetual existence, no wrong. 120

कर्त्ता, भोक्ता कर्मनो, विभव वर्त्ते ज्यांय ॥
वृत्ति वही निजभावमां, थयो अकर्त्तात्यांय ॥१२१॥
यदा विभावभाव: स्याद् भोक्ता कर्ता च कर्मण: ॥
यदाऽविभावभाव : स्याद् भोक्ता कर्ता न कर्मण: ॥१२१॥
कर्ता भोक्ता कर्म का, रहे विभाव मंझार ॥
वृत्ति वहे निजभाव में, होय विना करतार ॥१२१॥

In deusion one does the deeds,
Receives the fruits; but non doer-
He is, when sows the knowledge-seeds,
And constantly remains the knower. 121

अथवा निजपरिणाम जे, शुध्द चेतनारुप ॥
कर्ता भोक्ता तेहनो, निर्तिकल्पस्वरुप ॥१२२॥
स्वाभाविक्यस्ति वा वृत्ति: शुध्दा या चेतनामयी ॥
तस्या: कर्ताऽस्ति भोक्ताऽस्ति निर्विकल्पस्वरुपभाक् ॥१२२॥
अथवा निज परिणाम जो, शुध्द चेतना रुप ॥
कर्ता भोक्ता उसीका: विना विकल्प स्वरुप ॥१२२॥

Or as pure consciousness it acts,
The fruit as consciousness it reaps;
Without volition see these facts,
Thus call the soul as does, receives. 122

मोक्ष कह्यो निजशुध्दता, ते पामे ते पंथ
समजाव्यो संक्षेपमां, सकळ मार्ग निर्ग्रंथ १२३
उक्तो मोक्षो निजा शुध्दि: स मार्गो लभ्यते यत:
संक्षेपेणोदित: शिष्य ! नैर्ग्रन्थ: सकल: पथ: १२३
मोक्ष कह्यो निज शुध्दता, ज्यों पाये त्यों पंथ
समझायो संक्षेप में, सकल मार्ग निर्ग्रन्थ १२३

The perfect pure state of one`s self
Is tought to be true Liberation;
The way to it is right one`s self,
This true Saints` path is intuition, 123

अहो ! अहो ! श्रीसद्गुरु, करुणासिंधु अपार
आ पामर पर प्रभु कर्यो, अहो ! अहो ! उपकार १२४
कृपापानीयकूपार ! गुरुदेव ! अहो ! अहो !
अयमुपकृतो दीनश्चोपकारस्त्वहो ! अहो ! १२४
अहो ! अहो ! श्री सद्गुरु, करुणा -सिन्धु अपार
इस पामर पर प्रभुं किया, अहो ! अहो ! उपकार १२४

Thanks ! the Holy True Teacher,
Unfathomable ocean of compassion;
I`m highly obliged, Oh ! good Teacher,
The pupil poor has no expression. 124

शुं प्रभु चरण कने धरुं ? आत्मार्थी सौ हीन
ते तो प्रभुए आपियों, वर्तु चरणाधीन १२५
प्रभो: पादे धरेयं किमात्मतो हीनकं समम्
अर्पित: प्रभुणा सोऽस्ति भवेयं तद्वशंवद: १२५
क्या प्रभु चरणों में धरुँ, आत्मा से सब हीन
जिसने आत्म प्रतीति दी, बरतूं चरणाधीन १२५

What should I offer to you, Lord ?
In soul comparison all is trifle;
The soul is gifted by the Lord,
I wish to act to your oracle. 125

आ देहादि आजथी, वर्त्तो प्रभुआधीन
दास, दास, हुं दास छुं, तेह प्रभुनो दीन १२६
अद्यतस्तच्छरीरादि जायतां प्रभुचेटकम्
दासो दासोऽस्ति दासोऽस्मि तत्प्रभेर्दीनशेखरः १२६
इस देहादिक आज से, बरतूं प्रभु आधीन
दास दास हूँ दास हूँ तेरा प्रभु मैं दीन १२६

Hence forward this my body abd all,
Are at your feet, I wish to serve;
Your humble servant, poor soul,
Ever servant`s I don`t deserve. 126

षड् स्थानक समजावीने, भिन्न वताव्यो आप
म्यानथकी तरवारवत् , ए उपकार अमाप १२७
स्थानषट्कं विसंज्ञाप्य भिन्नं दर्शितवान् भवान्
अयिकोशमिवाऽऽत्मानं चामितोऽयमनुग्रहः १२७
षट् स्थानक समझाय कर भिन्न बताये आप
म्यान मध्य तरवार वत, यह उपकार अमाप १२७

Explanations of doctrines six !
As swords from sheaths so clearly;
The self is shown by you distinct,
You obliged me immeasurably. 127

दर्शन षटे शमाय छे, आ षट् स्थानक मांहि

विचारतां विस्तारथी, संशय रहे न कांइ ॥ १२८ ॥

स्थानषट्केसमाप्यन्ते दर्शनानि षडवे भो: ॥

न तत्र संशय: कोऽपि यद्यालोच्येत विस्तरम् ॥१२८ ॥

दर्शन छहों समात है, इस छह थानक मांहि ॥

कर विचार विस्तार से, संशय रह कछु नांहि ॥१२८ ॥

Six schools of thought lie in six docttines,

If one thinks deeply in details;

The vital ttruth he ascertains,

Undoubtedly, he never fails. 128

आत्मभ्रांतिसम रोग नहीं, सद्गुरु वैद्य सुजाण ॥

गुरुआज्ञासम पथ्य नहीं, औषध विचार ध्यान ॥ १२९ ॥

आत्म भ्रान्तिसमो रोगो नास्ति भिषग् गुरुपम: ॥

गुरोराज्ञासमं पथ्यं ध्यानतुल्यं न चौषधम् ॥१२९ ॥

आत्म-भ्रान्तिसम रोग नहिं, सद्गुरु वैद्य सुजान ॥

गुरु आज्ञासम पथ्य नहिं, औषधि चिन्तन ध्यान ॥१२९ ॥

There`s no disease as self-delusion,

The well-versed doctor`s Teacher true;

The Teacher`s precept`s prescription,

Thought-concentration`s medicine due. 129

जो इच्छो परमार्थ तो, करो सत्य पुरुषार्थ ॥

भवस्थिति आदि नाम लइ, छेदो नहीं आत्मार्थ ॥१३० ॥

प्रेप्सव: परमार्थ ये ते कुर्वन्त्वात्मपौरुषम् ॥

भवस्थित्यादिहेतोस्तु न च्छिन्दन्तु निजं बलम् ॥१३० ॥

जो इच्छा परमार्थ की, करो सत्य पुरुषार्थ ॥

भव-थिति आदिक नाम लइ, छेदो नहिं आत्मार्थ ॥१३० ॥

If you hope for Soul-reality,

True self-effort you must begin;
Depending on fate, destiny,
Destroy not self searching, I mean. 130

निश्चयवाणी सांभळी, साधन तजवां नोय
निश्चय राखी लक्षमां, साधन करवां सोय १३१
आकर्ण्य निश्चितां वाणीं त्याज्यं नैव सुसाधनम्
रक्षित्वा निश्चये लक्ष्यमाचर्य: साधनाचय: १३१
निश्चय-वाणी श्रवण कर; साधन त्याग अयोग्य
निश्यच राखो लक्ष्य में, साधन करना योग्य १३१

By hearing words of view absolute;
Let not one give up formal means;
Attending to the view absolute,
One should perform all freedom-means 131

नय निश्चय एकांतथी, आमां नथी कहेल
एकांते व्यवहार नहीं, बन्ने साथ रहेल १३२
निश्चयो व्यवहारो वा नात्रैकान्तेन दर्शित:
यत्र स्थाने यथायोग्यं तथा तद् युगलं भवेत् १३२
नय निश्चय एकान्त का, इस में नहिं व्याख्यान
एकान्ती व्यवहार नहिं, दोनों साथहि जान १३२

Neither absolute view one-sided,
Nor stand- point practical alone;
In this Gospel is emphasized,
But both together are due shown. 132

गच्छ मतनी जे कल्पना, ते नहीं सद्व्यवहार
भान नहीं निजरुपनुं, ते निश्चय नहीं सार १३३

सद्व्यवहारहीनऽस्ति कल्पना मत-गच्छयो:ं
निजभानाद् ऋते तात ! निश्चयो न हि सुन्दर:ं१३३ं
गच्छ वर्ग की कल्पना, वह नहिं सद्व्यवहारं
भान नहीं निज रुप का, वह निश्चय नहिं सारं१३३ं

Sectarian views, self-guiding whims,
Are not right stand-point practical;
Nor right absolute view, it seems,
Without self experience, it`s oral. 133

आगळ ज्ञानी थइ गया, वर्तमानमां होयं
थाशे काळ भविष्यमां, मार्ग भेद नहीं कोयं१३४ं
अभूवन् ज्ञानिना: पूर्व वर्तन्ते ये च नाऽगता:ं
विदां तेषां समेषां वै मार्गभेदो न विद्यतें१३४ं
आगे ज्ञानी हुइ गए, वर्तमान में होयं
होंगे काल भविष्य में, मार्ग भेद नहिं कोयं१३४ं

There were the seers long ago,
There are in present times alive;
In times to come the I shall be so,
The path`s the same that they revive. 134

सर्व जीव छे सिध्दसम, जे समजे ते थायं
सद्गुरु आज्ञा जिन दशा, निमित्त कारण पांयं१३५ं
सिध्दतुल्यान् समान जीवान यो जानाति भवेत् स स:ं
अर्हत्स्थितिर्गुरोराज्ञा निमित्तं तत्र विद्यतें १३५ं
सर्व जीव हैं सिध्द सम, जो समझै शिव पांहिंं
सद्गुरु आज्ञा जिनदशा, निमित सुकारण मांहिं१३५ं

All soouls arelike the perfect ones,
Self-knowledge leads to perfection;

Auxiliary cause is obedience-

To teacher`s word, Jina- condition, 135

उपादाननुं नाम लई, ए जे तजे निमित्त

पामे नहीं सिध्दत्वने, रहे भ्रांतिमां स्थित १३६

उपादानच्छलेनैव निमित्तानि त्यजन्ति ये

लभन्ते सिध्दभावं नो भ्रान्ता: स्युस्ते उत ध्रुवम् १३६

उपादान का नाम ले, वे जो तजहिं निमित्त

पायें नहिं सिध्दत्व को, रहैं न्रान्ति न्रनुरक्त १३६

Who put forward the subject- cause,

And leave the auxiliary one ;

In delusion they firmly pause,

And can`t attain the perfection. 136

मुखथी ज्ञान कथे अने, अंतर छूट्यो न मोह

ते पामर प्राणी करे, मात्र ज्ञानानो द्रोह १३७

वक्ति ज्ञानकथां वक्त्राच्चित्तं मोहतमावृतम्

यस्य रङकस्य मर्त्यस्य ज्ञानिद्रोही स केवलम् १३७

मुख से ज्ञान कहे तदपि, छुटो न न्रन्तर मोह

वह पामर प्राणी करे, मात्र ज्ञानिजन द्रोह १३७

Lip- wise are some, pretending heart,

They have no love lost for the seer;

They aid senseless, play pitiable part,

Have seer`s show, delusion-dear. 137

दया, शांति, समता, क्षमा, सत्य, त्याग, वैराग्य

होय मुमुक्षुघटविषे, एह सदाय सुजाग्य १३८

दया शान्ति: क्षमा साम्यं वैराग्यं त्याग-सत्यते

मुमुक्षुहृदये नित्यमेतं स्यु: प्रकटा गुणा:ॅ१३८ॅ

दया शान्ति समता क्षमा, सत्य त्याग वैरागॅ

होय मुमुक्षु अन्तर विषै, यही सर्वथा जागॅ१३८ॅ

Awakend seekers, heart contains,

Compassion, peace, forgiveness, truth;

An equal-eye in loss or gains,

Unattachment, donation, Truth. 138

मोहभाव क्षय होय ज्यां, अथवा होय प्रशांतॅ

ते कहिये ज्ञानी दशा, बाकी कहिए भ्रांतॅ१३९ॅ

यत्राऽस्ति मोहनं क्षीणं वा प्रशान्तं भवेत् तकत्ॅ

बाच्या ज्ञानिदशा साऽन्या भ्रान्तता स्पष्टमुच्यतेॅ१३९ॅ

मोह भाव क्षय होय जहँ, ञ्रथवा होत प्रशांतॅ

वह कहिए ज्ञानी दशा, बाकी कहिए भ्रांतॅ१३९ॅ

You find extinction or suppression,

Of infatuation as a rule;

In seers` heart, there`s no delusion,

Else-where you find delusion full. 139

सकळ जगत् ते एठवत्, अथवा स्वप्नसमानॅ

ते कहिये ज्ञानदिशा, बाकी वाचाज्ञानॅ१४०ॅ

उच्छिष्टान्नायमानं वा स्वप्नवद् वेत्ति या जगत्ॅ

एषा ज्ञानिस्थितिर्वाच्या शेषं वाग्जालमामतम्ॅ१४०ॅ

सकल जगत उच्छिष्टवत्, या जो स्वप्न समानॅ

वह कहिए ज्ञानी दशा, बाकी वाचा ज्ञानॅ१४०ॅ

The seer`s state is thus described,

The world to him is like a dream;

Or left-off food when satisfied,

The rest are lipwlse, not supreme. **140**

स्थानक पांच विचारीने, छट्टे वर्त्ते जेह॰

पामे स्थानक पांचमुं, एमां नहीं संदेह॰१४१॰

स्थानपञ्चकमालोच्य षष्ठकेय: प्रवर्तते॰

प्राप्नुयात् पञ्चमं स्थानं नाऽत्र शङ्कणोऽपि रे !॰१४१॰

थानक पांच विचार कर जो षट् पद वर्तेह॰

पावे थानक पांचवां, इसमें नहिं सन्देह॰१४१॰

Who thinks of first five doctrines well,

According to the sixth who acts;

Attains the fifth, great seers tell,

No doubts maintain in these true facts. **141**

देह छतां जेनी दशा, वर्त्ते देहातीत॰

ते ज्ञानीनां, चरणमां, हो वंदन अगणित॰१४२॰

देहातीता दशा यस्य देहे सत्यपि वर्तते॰

तज्ज्ञानिचरणे मेऽस्तु वन्दनाऽगणिता त्रिधा॰१४२॰

देहस्थित जिनकी दशा, बर्ते देहातीत॰

उन ज्ञानीजन चरण में, हो बंदन अगणीत॰१४२॰

I often bow to him who lives,

Though in body, above it;

The seer`s word always survives,

The North pole-star resembles it. १४२